

द्वितीयोऽध्यायः णिजन्त प्रेणार्थक क्रियाएं

जहां कोई काम स्वयं नहीं किया जाता बल्कि दूसरे से करवाया जाता है वहाँ प्रेणार्थक क्रिया का प्रयोग होता है। प्रेणार्थक वाक्य में प्रेरणा करने वाला (प्रेरककर्ता) प्रथमा से रखा जाता है, जिसे प्रेरणा की जाती है वह (प्रयोज्य या प्रेरितकर्ता) तृतीया में रखा जाता है और धातु के आगे णिच् (इ) प्रत्यय और “अ” (अय) विकरण जोड़ कर सब लकारों के रूप चुरादि गण समान बनाए जाते हैं। क्रिया का प्रयोग कर्ता के अनुसार ही होती है। णिजन्त क्रिया प्रायः उभयपदी होती है। जैसे :-

(i) रसोइया भोजन पकाता है = सूदो भोजनं पचति।

देवदत्त रसोइये से भोजन पकवाता है = देवदत्तः सूदेन भोजनं पाचयति पाचयते वा।

(ii) भिखारी अन्न मांगता है = गोबिन्दो भिक्षुकैणान्नं याचयति याचयते वा।

नोट :- गमन, दर्शन, श्रवण, प्रवेश, आरोहण तरण, ग्रहण, प्राप्ति, ज्ञान, पढ़ना, पीना, भोजन, (केवल भुज्) धातुओं के णिजन्त प्रयोग में अणिजन्त क्रिया के कर्ता में द्वितीया विभक्ति ही होती है। जैसे :-

“गमन” के योग में :-

पाण्डव वन को जाते हैं = पाण्डवाः वनं गच्छन्ति।

कौरव पाण्डवों को वन भेजते हैं = कौरवाः पाण्डवान् वनं गमयन्ति। “पा” के योग में :-

बच्चा दूध पीता है = शिशु दुग्धं पिबति।

माता बच्चे को दूध पिलाती है = माता शिशुं दुग्धं पाययति। इत्यादि।

कुछ प्रेणार्थक प्रसिद्ध धातुओं के रूप

धातु	प्रेणार्थक-अर्थ	रूप	धातु	प्रेणार्थक-अर्थ	रूप
गम्	भेजना	गमयति-ते	नम्	झुकता है	नमयति-ते
शिक्ष्	सिखाता है	शिक्षयति-ते	क्रीड्	खिलवाता है	क्रीडयति-ते
रक्ष्	रक्षा करवाता है	रक्षयति-ते	पुज्	पूजा करवाता है	पूजयति-ते
सेव्	सेवा करवाता है	सेवयति-ते	जन्	पैदा करता है	जनयति-ते
हस्	हंसाता है	हासयति-ते	पठ्	पढ़ाता है	पाठयति-ते
चल्	चलाता है	चालयति-ते	वह्	उठवाता है	वाहयति-ते
स्था	ठहराता है	स्थायति-ते	प	पिलाता है	पाययति-ते
दा	दिलाता है	दाययति-ते	घ्रा	सुंघवाता है	घ्रापयति-ते
पा	पालन करवाता है	पालयति-ते	हा	छुड़वाता है	हापयति-ते
अधि-इ	पढ़ाता है	अध्यापयति-ते	दुह्	दुहाता है	दौहयति-ते
बुध्	रुकवाता है	बोधयति-ते	भुज्	खिलाता है	भोजयति-ते
रुध्	रुकवाता है	रोधयति-ते	क्षिप्	फेंकवाता है	क्षेपयति-ते
मिल्	मिलाता है	मेलयति-ते	लिख्	लिखाता है	लेखयति-ते
दृश्	दिखाता है	दर्शयति	नृत्	नचाता है	नर्तयति-ते

कृ	करवाता है	कारयति-ते	मृ	मरवाता है	मारयति-ते
वृध्	बढ़ाता है	वर्धयति-ते	भृ	भरवाता है	भारयति-ते
जागृ	जगाता है	जागरयति-ते	शी	सुलाता है	शाययति-ते
क्री	खरीदवाता है	क्रीययति-ते	हन्	मरवाता है	घातयति-ते
स्ना	स्नान करवाता है	स्नायति-ते	श्रू	सुनाता है	वाचयति-ते

संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. गुरु शिष्य को समिधा लाने के लिए भेजता है।
2. चैत्र मैत्र को पाठ पढ़ाता है।
3. माता बालक को स्नान करवाती है।
4. गीदड़ शेर से बैल को मरवाता है।
5. विदूषक ने दर्शकों को बहुत हंसाया।
6. ऋषि दयानन्द ने वेद का सन्देश सुनाया।
7. लड़के लड़कियों से गाना गवाते हैं।
8. माँ बच्चे को गर्म-गर्म दूध पिलाती है।
9. उसने अपनी वधू को चौदहवीं का चाँद दिखाया।

